REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2019

कडी नगर के स्थापत्य

डॉ.हरेश के. पंचाल
इतिहास विभाग,
नवजीवन आर्टस एन्ड कोमर्स कोलेज, दाहोद (गुजरात)

सारांश :

भारत देश के पश्चिम विभाग में गुजरात प्रदेश आया हुआ है। प्राचीन युग से ही यह प्रदेश का उद्‌भव हुआ है। सोलंकी युग में पहली बार 'गुजरात' शब्द का प्रयोग हुआ था। उससे पहले इस प्रदेश के अलग-अलग नाम थे। जैसे की 'लाट', 'आनर्त', 'सुराष्ट्र', 'अपरान्त', 'गुर्ज्जरता', 'गुर्जत्रता' आदि। लाट प्रदेश दक्षिण गुजरात का एक भाग था। सुरत और उसक आस-पास के प्रदेश लाट प्रदेश के नाम से जाने जाते थ। सुरत की उस प्रदेश की भाषा को लाटी भाषा के नाम से पहचानते। आनर्त शब्द का प्रयोग यु.एन.त्सांगने किया है। वडनगर की आस-पास के प्रदेश सुराष्ट प्रदेश कहेलाता। गुर्ज्जरता, गुर्जत्रता आदि नाम बहार से आये है। आखिर में यह सभी नामों पर से गुजरात शब्द का नाम उतर आया है।

की-वर्ड : पुरातन, नगर, स्थापत्य, किल्ला.

कडी की ऐतिहासिकता :

प्राचीन पुरातन काल में कडी का नाम 'कटिपुर' होगा ऐसा माना जाता है। ई.स.१२०० में रचा हुआ 'पासा के कुचरिय' नामक ग्रंथमें से द्दश्य शब्द मीला हुआ है। जिसमें 'बेडीला', 'कंडीडी' (तंबोल), 'अराडी', 'कुसी', 'रीहर' आदि शब्दों का उल्लेख देखने को मिलता है। कडी नाम के पीछे उसकी वसाहतो के जातिओं का इतिहास देखने को मिलता है। तंबोल के संस्कृत रुप में 'कंडवी' नाम क साथ 'कडी' नगर जुडा हुआ देखने को मिलता है।

ज्यादातर गुजरात में गाम, शहर या नगर के नाम व्यक्ति, देव, वनस्पति, प्राणी या टोली के कोइ खासियत से रखा हुआ है। कडी नाम भी ऐसे कोई संकेत के साथ जुडा हुआ देखने को मिलता है। कडी नाम कोई महत्व की कडी देखा है। लोकवायका के हिसाब के प्राचीनकाल में लोग उसे 'कटिपुर' या 'कटिग्राम' तरीके पहचानने का प्रयास करते है। जबकि शब्द का अर्थ करते कडी यानी दो वस्तु या पदार्थो को जोडती मघ्यस्थी या दोनो के बीच जोडने का परिबल है।

प्राचीन समय का कडी 'कतीपुर' के नाम से पहचाना जाता जो मुस्लिम काल में महत्व का मुख्य केन्द्र जनता तेकडी रसुलाबाद के नाम से पहचाना जाता था। यह नाम का उल्लेख 'कडी' के किल्ला के दरवाजे की कमान में जो पशिर्यन लेख-शिलालेख हे उसमें किया है। जिस का उल्लेख 'मीराते अहमदी' नामक ग्रंथमें भी मिला है। उपरांत 'तारीखे फोरोजशाही' में उसे मध्यकाल में कडा तरीके वर्णवेल जो हाल में 'कडी' के नामे पहचानते है।

स्थापत्य याने क्या ?

भारतीय परंपरा के हिसाब से स्थापत्य का विचार करे उसके पहले स्थापत्य शब्द के बारे में थोडो चर्चा करना आवश्यक है। पहले अपनो ने देखा कि यह शब्द अंग्रेजी शब्द आर्किटेकचर का गुजराती पर्याय तरीके प्रचार में आया है लेकिन संस्कृत शब्दकोश 'स्थपित'

LBP PUBLICATION

(पुल्लिंग) शब्द राजा के अंतःपुर के कंचुकी जेसे अधिकारी के अर्थ में उपयोग किया है। मानसार 'स्थापत्यालय', वायव्य कौन के अग्निकोण में करने का किया है। उसमें भी 'स्थापत्य' या तो स्थपित के अर्थ में अथवा स्थपतिओ के कहने का अगर (स्थल) और कामकाज करने का स्थान यह अर्थ में उपयोग करते है। स्थपित शब्द के चार अर्थ संस्कृत कोशकारो है। कंचुकी जीवेष्टि (यज्ञ) करनार, कारीगर और सतम यानि पुरुष के अधिश. जबकि यह उल्लेखो में स्थपित के कार्य या कला के लिए स्थापत्य शब्द का उपयोग किया हुआ मिलता नहीं फिरभी भोजकृत समरांगण सूत्रधार नामक ग्रंथ में स्थपित की कला के अर्थ में स्थापत्य शब्द का उपयोग किया है जैसे कि -

स्थापत्यमुच्यतेऽस्माभिरिदानां प्रक्रमागतम्।
ज्ञातेन येन ज्ञायन्ते स्थपतीनां गुणागुणाः ।। ?
शास्त्र कर्म तथा प्रज्ञा शीलं व क्रियया न्वितम् ।।

अब क्रमागत स्थापत्य का वर्णन किया है। जो जानने से स्थापति के गुण और दोष जान शकते है। स्थापत्य को क्रिया से युक्त चार तरीके से जानने के है। शास्त्र, कर्म, प्रज्ञा और शील.

आर्किटेक्ट स्थापत्य की कला जिस में समा शके ऐसे ज्यादा प्रचलित संस्कृत शब्द 'वास्तु' है। इस दृष्टि से स्थापत्य से क्या समजने का है। और उसमें क्या क्या आ शके ? यह जानने के लिए वास्तुविद्या के ग्रंथो का आधार लेना पडा है।

वास्तुविद्या का उद्‌गम आदि बाबत ते विद्या के ग्रंथो में पौराणिक शैलिने दिया है। जैसे नाट्यविद्या-वेदकने शास्त्र को उद्‌गम भरतनाट्य शास्त्र में दिया है। यह पौराणिक शैली में वह कला का स्वरुप कार्य और अंगो का निरुपण समाया है। इसमें से अपनो को भारतीय स्थापत्य समझने के लिए उपयोगी दृष्टि मिलती है।

❋ कडी के स्थापत्यो :

राजश्रीओ, मंत्रीओ, श्रेष्ठओं और नागरिको द्वारा उद्‌भव पामा हुआ बांधकाम जैसे कि महल, किल्ला, दरवाजा, कोट, भोंयरे, मिनार, वाव, तालाब, कुंडे, कूवे आदि जैसे स्थापत्यो को नागरीक स्थापत्यो के नाम से पहचानते है।

❋ धार्मिक स्थापत्यो :

हिन्दु मंदिरो, मठो, जैन दहेरासरो, उपाश्रयो, अन्य जैन संस्थाऐं, मुस्लिम दरगाहें, मस्जिदें आदि का समावेश धार्मिक स्थापत्यो में किया है।

❋ कितने एसे नागरीक और धार्मिक स्थापत्य है जो नीचे दिये हुए है।

(१) कडी का किल्ला :

कडक्की नगर का नाम कडी जो सोलंकी काल से ज्यादा प्रचलित बना हुआ था। वैसे तो कडी की स्थापना अवशेषो उपर से सोलंकी काल के पहले हुई देखने को मिलती है।

देशी स्थापत्य में, किल्ले के तीन प्रकार होते है जैसे कि जणदुर्ग, गिरिदुर्ग और स्थणदुर्ग ! उसमें कडी का किल्ला स्थल दुर्ग जान सके क्युंकि महत्व का शहर और सरहद के लश्करीय महत्व के स्थल सभी स्थल दुर्ग लिखते है।

सुलतानो के समय में कडी में ई.स.१३०८ में कडी नगर के फिरते किल्ला बांधने में आया और कायमी लश्करी छावणी की स्थापना भी की। अहमदशाह के समय में भी अहमदशाहने कडी किल्ला को ज्यादा मजबूत बनाया। जब कि मोघलो के समय में अल्पखान ने कडी किल्ले को रीपेर किया।

उस के बाद गुजरात के शासको में सुलतानो के समय में अहमदशाह ने कडी के टूटे हुए किल्लो को ई.स.१४२० में फिर से बंधाया उसके बाद बाली शासको के समय में अकबर कडी आया तब कडी किल्लेबंध मजबूत नगर था। उसके बाद जहांगीर दिल्ही की

गादी पे था। उस समय ई.स.१६०६ से १६०९ में जहांगीरकी आज्ञा से गुजरात के सुबा मुर्तजाखान बुखारीने नये सिरे से सख्त ऐसा कडी का किल्ला फिर से बंधाया।

(२)दरवाजें :

कडी कोट के चार तोतिंग दरवाजों में से हाल टावर दरवाजा दिखने को मिलता है। जबकि कडी बजार के बीच आया हुआ कोट मूल स्थिति में दिखने को मिलता है। यह कोटी की उंचाइ बहार के भाग से ज्यादा है। उसमें भी पूव तरफ की तोतिंग दिवालें ज्यादा उंची और मजबूत है। किल्ला के चारों तरफ १२ छोटे-बडे बूरज है। जिसमें ६ बूरज ज्यादा मजबूत और ज्यादा घेराव वाले है। जिसका पाया लगभग १३ से २० मीटर घेराव वाला है। उपर भाग में वह घेराव कम होता जाता है। पिछे की दिवार सबसे उंची है। जबकि दरवाजा तरफ की जमीन से २० मीटर उंची है। बूरज उपर जगा के कारन लडाई के वक्त ज्यादा सरलता रहे ऐसी व्यवस्था देखने को मिलती है।

मुख्य प्रवेशद्वारसे कोट के अंदर के भाग में दक्षिण दिशा में चोरासी बजार के नीचे चोंथरु आया है। जबकि चोरासी बजार महेल से पूर्व तरफ सात माले की हवेली और सूपडा महेला आया है।

❋ धार्मिक स्थापत्यो :

(१) यवतेश्वर महादेव :

सिद्धि-समृद्धि-भरपूर,
कडी नगर का मणीपुर,
यवतेश्वर महादेव की महेर,
यहाँ है सबको लीला लहेर.

कडी के मंदिरो में शिरमोर यवतेश्वर महादेव का मंदिर जाना जाता है। सुवर्ण की कडी पर जैसे मणि शोभता है वैसे नगर में मणिपुर महोल्ला विविध क्षेत्र में अग्रेसर था। यहां यवतेश्वर महादेव की महेर उतरी है। यह प्राचीन मंदिर के स्थापक वडोदरा के दिवान राजवी अने बालाज सुपुत्र थे। एसा एक संशोधन के मुताबिक नोंधाया ह। ई.स.१८०२ के बाद यवतेश्वर महादेव का मंदिर बालाजी के पुत्र ने बंधाया है। यह मंदिर का नविन बांधकाम ई.स.२००० में विनाशक भूकंप ने जर्जरीत किया था।

(२)भवनाथ महादेव :

कडी में भवनाथ मंदिर पांचसो वर्ष पुराना हो ऐसा माना जाता है। उसका निश्चित कोई समय जानने को नहीं मिला। मंदिर के पुजारी के कहने के मुताबिक भवनाथ मंदिर की रचना संवत १८८७ के श्रावण सुद को किया था एसा माना जाता है। यह मंदिर के बारे में ज्यादा कोई इतिहास प्राप्त हुआ नहीं लेकिन थोडी सी माहिती मिली है जो इस प्रकार है।

भवनाथ महादेव का मंदिर वडवाला हनुमानजी मंदिर के बिलकुल पिछे आया है। उस मंदिर के चारो तरफ पक्का वरंडा चुना हुआ है। उस मंदिर के अंदर शिवलिंग स्वंभू मनाया है और यह शिवलिंग बापु की समाधि उपर हो ऐसा जाना जाता है। इसके अलावा यह भवनाथ मंदिर के अंदर नागदादा, बलीयादेव, बापुकी समाधि स्मारक और ओटले आये हुए है उपरांत उसकी मंदिर के पास में पूरानी वाव 'दिवानजी की वाव' आयी हुई है। यह भवनाथ मंदिर के 'दिवानजी धाबु' ऐसे नाम से जान जाते है।

❋ समापन :

कडी एक ऐतिहासिक नगर जैसा जाना जाता है। जिसमें ज्यादातर नागरिक और धार्मिक स्थापत्यों आये हुए है। नागरकी स्थापत्यो में कडी के किल्ले और दरवाजें, कडी का राजमहेल, घुंमटीया महेल, भोंयरें, मिनार, चोर्यासी बाजार, वाव, कूवें और तालाब आदि नागरीक स्थापत्य आये हुए है। उपरांत युवतेश्वर महादेव, भीमनाथ महादेव, भवनाथ महादेव, दलुकुंड महादेव, ओघटनाथ महादेव, प्राणेश्वर महादेव, तेजेश्वर महादेव आदि धार्मिक स्थापत्यों का समावेश हुआ देखने को मिलता है।

LBP PUBLICATION

VOLUME - 8 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2019

✲ संदर्भ सूचि :

(१) गुजरात का इतिहास, ई.स.४७० से १३०४ तक
(२) कडीकर यशवंत, कडी की गौरव गाथा, आदर्श प्रकाशन, अहमदाबाद, १९२८
(३) देसाई जीवणभाई ए., 'कडी का इतिहास', प्रथम आवृत्ति, जादवपुरा, २००६-०७
(४) शाह प्रियबाला, 'प्राचीन', प्राचीन भारतीय शिल्पकला और स्थापत्य, प्रथम आवृत्ति, गुजरात युनिवर्सिटी, अहमदाबाद, वर्ष : १९६८
(५) कडीकर यशवंत, कडी की गौरव गाथा, आदर्श प्रकाशन, अहमदाबाद, १९२८
(६) पटेल सतिषकुमार जे., 'कडी नगर में गायकवाडी शासन', अप्रगट लघुशोध निबंध, हेम. उत्तर गुजरात युनिवर्सिटी-पाटण, २००८-०९
(७) परीख रसीकलाल छोटालाल और शास्त्री हरिप्रसाद (संपादक) - गुजरात का राजकीय और सांस्कृतिक इतिहास, गथ-७, भो.जे.विद्याभवन, अहमदाबाद
(८) पटेल जीगरकुमार बी., कडी शहर का स्थापत्यों का एक इतिहास-लघुशोध निबंध, २०१३-१४

डॉ.हरेश के. पंचाल
इतिहास विभाग, नवजीवन आर्टस एन्ड कोमर्स कोलेज, दाहोद (गुजरात)

LBP PUBLICATION